पवित्र जल विनिमय कार्यक्रम

चर्चा में क्यों?

28 जुलाई 2025 को उत्तर प्रदेश के **मुख्यमंत्री** योगी आदित्यनाथ ने **काशी विश्वनाथ मंदिर** और **श्री रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग** के बीच **पवित्र जल विनिमय कार्यक्रम** का शुभारंभ किया।

मुख्य बिंदु

- **पृष्ठभूमि:**
  - यह **विनिमय कार्यक्रम** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की **काशी-तमिल संगमम् पहल** का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य **काशी (वाराणसी)** और **तमिलनाडु** के लोगों के बीच **घनिष्ठ संबंधों** को बढ़ावा देना है।
- **पवित्र जल और रेत का विनिमय:**
  - इस **विनिमय** के अंतर्गत **कलशों** में भरा गया पवित्र जल और रेत शामिल थे- **प्रयागराज के त्रिवेणी संगम** (गंगा, यमुना तथा पौराणिक सरस्वती का संगम) का पवित्र जल एवं रेत व **रामेश्वरम् कोड़ी तीर्थम्** (तमिलनाडु स्थित रामेश्वरम् मंदिर का पवित्र जल)।
  - इनका आदान-प्रदान **श्री रामेश्वरम् ज्योतिर्लिंग** के **देवकोट्टई ज़मींदार फैमिली ट्रस्ट (DZFT)** के प्रतिनिधियों और **काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट** के अधिकारियों के बीच संपन्न हुआ।
  - **आदान-प्रदान किये गए जल** का उपयोग **भगवान विश्वनाथ** और **भगवान रामनाथस्वामी** दोनों के **जलाभिषेक (अनुष्ठान स्नान)** के लिये किया जाएगा।
- **आगामी अनुष्ठान:**
  - **भगवान विश्वनाथ** का जलाभिषेक **श्रावण पूर्णिमा, 9 अगस्त 2025** को **रामेश्वरम से लाए गए जल** से किया जाएगा।
- **महत्त्व:**
  - यह पहल **काशी और तमिलनाडु** के बीच **संबंधों को मज़बूत** करती है, साथ ही **शास्त्रों में वर्णित एक पवित्र परंपरा** को **भावी पीढ़ियों** के लिये **पुनर्जीवित** तथा **संरक्षित** करती है।

काशी तमिल संगमम

- **परिचय**
  - यह एक **सांस्कृतिक पहल** है, जिसका उद्देश्य तमिलनाडु और काशी (वाराणसी) के बीच **ऐतिहासिक** तथा **सांस्कृतिक संबंधों** का उत्सव मनाना एवं **प्राचीन सभ्यतागत बंधन** को मज़बूत करना है।
  - यह आयोजन **'एक भारत श्रेष्ठ भारत'** पहल के अनुरूप है, जो भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत के एकीकरण को बढ़ावा देती है।
  - **काशी-तमिल संगमम् (KTS 3.0)** का **तीसरा संस्करण** उत्तर प्रदेश के **वाराणसी** में **फरवरी 2025** में आयोजित हुआ, जो तमिलनाडु और काशी के बीच **सांस्कृतिक संगम** का प्रतीक है।
- **ऐतिहासिक महत्त्व:**
  - काशी (उत्तर प्रदेश) और तमिलनाडु के बीच ऐतिहासिक संबंध 15वीं शताब्दी से चले आ रहे हैं, जब मदुरै के राजा पराक्रम पांड्य अपने मंदिर (शिवकाशी, तमिलनाडु) के लिये एक पवित्र शिवलिंग लाने हेतु काशी गए थे।
  - पांड्य शासकों ने केरल सीमा के निकट दक्षिण-पश्चिमी तमिलनाडु में स्थित तेनकाशी में काशी विश्वनाथ मंदिर की भी स्थापना की।
  - यह गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंध **काशी तमिल संगमम्** पहल के सार को रेखांकित करता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/holy-water-exchange-programme